कविता

यह बच्चा किस पर गया है

किससे मिलती है शकल
यह बच्चा किस पर गया है
यह बच्चा
आसमान पर गया है
मुस्कुराता है
तारों की तरह
चमक पड़ती हैं आंखें
यह बच्चा
पूरब पर गया है
कैसा दिपदिप है माथा
सूरज
यह बच्चा
चांद पर गया है
हंसता है
दंतुलियों से टपक पड़ती है चांदनी
यह बच्चा
नदी पर गया है
लहरों सा उछलता है कभी
कभी सोचता रहता है
देर तक
यह बच्चा
पेड़ पर गया है
ताकता है चिड़ियों की ओर
निमंत्रण भरी आंख से
कैसा है यह बच्चा
इसकी आंखें रूसियों जैसी हैं
यह कजाखों की तरह चोंगा पहने है
इसके बाल
गाल भूरे
घुंघराले हैं
जर्मनों जैसे
इसका रंग
चीनी गेहूंआ है
इसकी नाक
हिन्दुस्तानी है
क्या कभी सोचा जा सकता है
कि इसके यूरोपीय हाथ
इसके बांग्लादेशी पैरों का शोषण करेंगे
ऐसा हो सकता है कभी
कि इसकी अमेरिकी हथेली
इसकी अफ्रीकी छाती पर मूंग दले
इसे बांटोगे
धरती टुकड़े-टुकड़े जो जाएगी
बहुत खूबसूरत है यह बच्चा
हमारे भविष्य पर गया है

अंशु मालवीय
('समकालीन भारतीय साहित्य' से साभार)